5:1-11

मसीह के दुःखों में संभागी होना : अपने आप को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता पर छोड़ देना

(भाग 2)

पत्री में इस बिन्दु पर आकर पतरस 2:13 में आरंभ की गई अनिवार्यताओं की ओर लौट कर आता है। प्रेरित ने 2:13 से लेकर 3:7 तक मसीहियों को चिताया था कि वे शासनों के आधीन रहें, दास अपने स्वामियों के आधीन रहें, और पत्नियाँ अपने पतियों के आधीन रहें। उसने 5 अध्याय में नवयुवकों को प्राचीनों के आधीन रहने का निर्देश देने के द्वारा शिक्षा के इस आदर्श को जारी रखा। एक अभिप्राय है जिसके अन्तर गत यह वर्तमान आग्रह, अन्य दोनों की अपेक्षा, पति/पत्नी को दिए गए निर्देशों (3:1-7) के अधिक निकट है। पत्नियों को पतियों के आधीन रहने को प्रोत्साहित करने के निर्देश के पश्चात, पतरस ने पतियों को भी कुछ निर्देश दिए। उसने इस प्रकार के निर्देश शासनों या दासों के स्वामियों को नहीं दिए। इस खण्ड में, प्रेरित ने नवयुवकों को आधीन रहने का आग्रह करने से पहले, प्राचीनों को निर्देश दिए। इससे आगे, उसने प्राचीनों को दिए गए निर्देशों के लिए, नवयुवकों के उनके आधीन रहने के निर्देशों की अपेक्षा अधिक शब्द प्रयोग किए। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीनों द्वारा अपने प्राचीन होने के उत्तरदायित्वों के निर्वाह को ठीक से करने की माँग ध्यान देने के योग्य है। नवयुवकों का आधीन होना प्राचीनों के ठीक से व्यवहार करने पर निर्भर था।

प्राचीनों के लिए प्रोत्साहन (5:1-4)

[1]तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगट होने वाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूँ [2]कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं पर मन लगा कर। [3]जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिये आदर्श बनो। [4]जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें

महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं।

आयत 1. जिस शब्द का अनुवाद प्राचीन (πρεσβύτερος, *प्रेस्बुत्रोस)* हुआ है, वह सामान्य रूप से किसी वृद्ध पुरुष को सूचित करता है (यूहन्ना 8:9; प्रेरितों 2:17; 1 तीमुथियुस 5:1), या यह उन्हें सूचित कर सकता है जो कलीसिया में आधिकारिक रीति से अगुवाई करने के लिए नियुक्त किए गए हैं (प्रेरितों 11:30; 14:23; 20:17; तीतुस 1:5; याकूब 5:14)। संदर्भ को निर्धारित करना है कि प्रयुक्त शब्द को किस के लिए प्रयोग किया गया है। जब पतरस ने लिखा, **तुम में जो प्राचीन हैं उन्हें यह समझाता हूँ**, और जारी रखते हुए कहा, "झुंड की रखवाली करो," तो यह स्पष्ट है कि यहाँ यह शब्द कलीसिया में अगुवाई के कार्य के लिए प्रयुक्त हुआ है। ये वही लोग हैं जिन से पौलुस 1 थिस्सलुनीकियों 5:12, 13 में आग्रह करता है: "हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो। और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेलमिलाप से रहो।"

कोई व्यक्ति "प्राचीन" होने का कार्यभार नियुक्ति होने के द्वारा वहन करता था (प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)। स्पष्टतः, कोई या तो वृद्ध है अथवा नहीं है। परन्तु जब वे जो कार्यभार वहन करते हैं उन्हें "प्राचीन" कहा जाता है तो सुझाव है कि वे वृद्ध पुरुष हों, यह चाहे जैसे भी परिभाषित हो। यद्यपि इसमें कि कौन "वृद्ध" है कुछ लचीलापन है, यह अभिव्यक्ति असीम लचीली नहीं है। किसी अठारह वर्षीय या तीस वर्षीय पुरुष को "वृद्ध पुरुष" मानने वाले विरले ही होंगे। जब पुरुष जिन्हें कलीसिया में अगुवे होने का दायित्व निभाना हैं "प्राचीन" कहलाते हैं तो तात्पर्य है कि उन्हें वृद्ध पुरुष भी होना है।

अंग्रेज़ी शब्द "priest" को शब्द-साधन के अनुसार यूनानी शब्द "प्राचीन" के साथ लगाया गया है, परन्तु नए नियम में यह स्पष्ट है कि जो प्राचीनों का कार्य कर रहे थे वे उस प्रकार से पादरी नहीं थे जैसे कि वर्तमान में कुछ कलीसियाओं में पादरी होते हैं। इसके साथ ही, जवानों को "प्राचीन" कहने की आधुनिक प्रथा का बाइबल में कोई समर्थन नहीं है। जब पुरुषों को प्राचीन के कार्य के लिए नियुक्त किया जाता है, तो आयु ही निर्धारण करने का घटक नहीं होती है, परन्तु आयु असंगत भी नहीं होती है। नए नियम के प्रयोग के अनुसार, जो प्राचीन का कार्यभार संभाले, वह इतनी आयु का अवश्य हो कि उसने अपने विषय कुछ कीर्तिमान स्थापित कर लिया हो। उसका यह कीर्तिमान उसकी सत्यनिष्ठा और भलाई की पुष्टि करे। एक जवान प्राचीन विरोधाभास है। ऐसा नहीं है कि केवल यहूदी लोगों में ही समाज अपने वृद्धों की ओर मार्गदर्शन और नेतृत्व के लिए, और कभी-कभी किसी आधिकारिक स्तर पर कार्य करने के लिए भी, देखता है। रोमियों पर भी, कम से कम गण तंत्रीय काल में तो, एक संसद सभा [सेनेट] द्वारा शासन किया जाता था। शब्द सांसद [सेनेटर] का शब्दार्थ है "एक वृद्ध पुरुष।" शब्द वृद्ध [सेनाईल] उसी लतीनी मूल से आता है। यह संयोग मात्र नहीं है कि

अमेरिका के संविधान के अनुसार, जो सेनेटर होकर कार्य करते हैं उनकी आयु की अनिवार्यता अधिक वृद्ध होने की है, उनकी अपेक्षा जो प्रतिनिधि सभा में कार्य करते हैं।

वृद्ध लोगों द्वारा नेतृत्व प्रदान करने की परंपरा इस्राएल के इतिहास में बहुत गहरी है। जब बोआज़ को उत्तराधिकार के प्रश्न का निवारण करना था तो वह नगर के फाटक पर वृद्ध लोगों के साथ, जो वहाँ के आदरणीय नैतिक और वैधानिक अगुवे थे, जाकर बैठा (रूत 4:2)। शमूएल से राजा नियुक्त करने की माँग करने को एकत्रित होने वाले भी वृद्ध ही थे (1 शमूएल 8:4, 5)। यह कहना सुरक्षित है कि इस्राएल में वृद्धावस्था नेतृत्व का पर्याय था। सुसमाचारों और प्रेरितों में, प्राचीन ही यहूदियों के अगुवे होते थे (उदाहरण स्वरूप, देखें, मत्ती 15:2; 16:21; मरकुस 8:31)। कलीसिया में भी वृद्ध इसी पृष्ठभूमि में सेवा करते थे। वे वह वृद्ध और बुद्धिमान पुरुष थे जिन्होंने अपने समाज से आदर अर्जित किया था। एक प्रकार से, प्राचीन प्रकट होते हैं। जैसे-जैसे समाज उनकी ओर परामर्श के लिए मुड़ता है, वे प्राचीनों का दायित्व निभाते हैं, और फिर जब वे उस सेवकाई को आगे भी करते रहने के लिए नियुक्त किए जाते हैं तो उन्हें आधिकारिक पहचान मिलती है।[1] याकूब की पत्री का यहूदियों के प्रति रुझान को ध्यान में रखते हुए, इसमें अचंभे की कोई बात नहीं है कि प्रभु के भाई ने इन अधिकारियों को “प्राचीन” कहकर संबोधित किया (याकूब 5:14)।

पतरस ने “तुम में जो प्राचीन हैं,” जो वृद्ध थे, जिन्हें कलीसिया में नेतृत्व का उत्तरदायित्व के लिए नियुक्त किया गया था और उन्होंने यह उत्तरदायित्व स्वीकार भी कर लिया था, को सिखाया। नए नियम में प्राचीन उसी समुदाय में कार्य करते थे जो उन्हें नियुक्त करता था। ऐसे प्राचीन थे जो इफिसुस की कलीसिया में सेवकाई करते थे (प्रेरितों 20:17) और ऐसे प्राचीन भी थे जो यरूशलेम की कलीसिया में सेवकाई करते थे (प्रेरितों 11:30)। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि जिस समुदाय में वे सेवकाई करते थे, प्राचीन उसके बाहर कोई नेतृत्व अथवा अधिकार जताते थे। सभी स्थानों के लिए एक ही प्राचीन नहीं हुआ करते थे। यह विचार एक प्रश्न उठाता है। जब पतरस ने अपने आप को **उनके समान प्राचीन** कहा, तो क्या यह संकेत था कि वह किसी विशेष मण्डली में प्राचीन का कार्य कर रहा था?

संभवतः पतरस के प्रेरित होने की स्थिति, उसकी सेवकाई के किसी समुदाय विशेष की होने से अधिक व्यापक थी। दूसरी ओर, संभव है कि पतरस को यरूशलेम की कलीसिया का प्राचीन या रोम की कलीसिया का प्राचीन नियुक्त किया गया होगा। हो सकता है कि ऐसी स्थिति के कारण उसने अपने आप को “उनके समान प्राचीन” कहा हो। किंतु जो स्पष्ट है वह यह है कि पतरस का प्राचीन होने का कार्य सामान्य से बढ़कर था। प्राचीन, विशिष्ट रीति से, अपना नेतृत्व और सेवकाई समुदाय के संदर्भ में निभाते थे, उस विशिष्ट कलीसिया के, जिसने उन्हें नियुक्त किया था।

पतरस ने प्राचीनों को “समान प्राचीन” संबोधित तो किया, परन्तु उसने उन्हें

ऐसे संबोधित किया जैसे कि उसका अधिकार और नेतृत्व उनसे बढ़कर था। वह प्रेरित था, जिसका तात्पर्य था कि अन्य बातों के अतिरिक्त **वह मसीह के दुःखों का गवाह भी था**। सुसमाचारों में दर्ज पतरस और यीशु के संबंधों के इतिहास की बहुतायत होने के बाद भी, यह विचित्र है कि उसने प्रभु के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध का कोई उल्लेख नहीं किया। उसने 2 पतरस में किया (2 पतरस 1:14, 17), परन्तु इस पत्री में नहीं। यद्यपि प्रेरित ने यीशु के जीवन से, उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के अतिरिक्त अन्य कोई हवाला नहीं दिया, फिर भी उसने अपने आप को "मसीह के दुःखों का गवाह" बताया। ऐसा होने से, इस बात से उसके आरंभिक शब्दों की दृढ़ पुष्टि होती है। यह पत्री उस प्रेरित के हाथों से आती है जिसे हम सुसमाचारों से जानते हैं।

जे. एन. डी. केली का तर्क था (लूथर और कैलविन को समर्थन के लिए बुलाते हुए) कि "मसीह के दुःखों का गवाह" कहने के द्वारा, लेखक का तात्पर्य था कि उसका मसीह के दुःखों में अभी भी संभागी होना जारी था। उसके गवाह होने का तात्पर्य था कि वह मसीह के साथ दुःखों में संभागी था।[2] यह सत्य है कि इस वाक्यांश से बिलकुल पहले और बाद वाले वाक्यांश लेखक के अपने पाठकों के साथ घटनाओं में संभागी होने की ओर ध्यान खींचते हैं। इस वाक्यांश में भी, पतरस अपने पाठकों को स्मरण करवा रहा था कि उन्होंने और उसने साथ ही साझा किया था - एक साथ गवाह हुए थे - मसीह के दुःखों के, स्वयं दुःख उठाने के द्वारा। लेकिन शब्द "गवाह" (μάρτυς, *मारतुस)* सामान्यतः उन घटनाओं का हवाला देता है जिन्हें स्वयं अनुभव किया हो और उसके पश्चात उन घटनाओं की मौखिक गवाही दी जाए। इस पत्री में प्रेरित पहले ही गवाही दे चुका था कि मसीह ने किस प्रकार दुःख उठाया (2:21-24)। यह अधिक भला है कि इस वाक्यांश को इस प्रकार लिया जाए कि लेखक चाहता था कि उसके पाठक जानें कि उसने व्यक्तिगत रीति से मसीह के दुःख उठाने को देखा था।

प्रेरित के शब्द सामान्य से विशिष्ट की ओर, फिर सामान्य की ओर जाते हैं। प्राचीन होने के नाते उसने अन्य प्राचीनों को संबोधित किया, परन्तु उसने ऐसा विशेषकर एक प्रत्यक्षदर्शी गवाह और प्रेरित होने के कारण किया (1:1)। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात, उसने **उन्हें प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी सह-विश्वासी के समान** संबोधित किया। अपने पाठकों के समान, पतरस भी प्रभु के लौटने की, उसकी महिमा के प्रकट होने की, और आने वाले न्याय की प्रतीक्षा रखता था। प्रेरित ने कोई बाहरी-व्यक्ति के समान परामर्श नहीं दिया, न ही उसने उन्हें परामर्श दिया जिन्होंने जीवन की सुविधाओं का आनन्द लेते हुए दुःख भोगा। वह उनमें से एक था। वह उनके समान प्राचीन था, और उनके समान ही उसने अपनी आत्मा को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता के हाथों में सौंपा था।

आयत 2. अंग्रेज़ी अनुवाद का प्रयोग करते हुए, कभी-कभी यह कठिन हो जाता है कि यूनानी में स्पष्ट दिखाई देने वाली शब्दों के सम्बन्ध को देखने पाएं। उदाहरण के लिए, अनिवार्य क्रिया रखवाला ποιμαίνω *(पोइमैनो)* से है। संज्ञा "चरवाहे," जिसका अनुवाद इफिसियों 4:11 में "रखवाले" [पास्टर] हुआ है

ποιμήν *(पोइमेन)* है। पास्टर के रूप में कार्य करना रखवाला होना है। इस आयत के आरंभिक भाग को ऐसे भी अनुवाद किया जा सकता है कि झुंड के "पास्टर बनो" या "रखवाले बनो।" जिन्हें पतरस ने पास्टर का कार्य करने का अनुरोध किया, उन्हें वह पहले ही अपने समान प्राचीन कह चुका था। न केवल हमारे समक्ष खण्ड में, वरन नए नियम में अन्य स्थानों पर भी, यह स्पष्ट है कि "प्राचीन" होना "रखवाले" [पास्टर] होना है। शब्दों का यही परस्पर घुलना-मिलना प्रेरितों 20 में भी दिखाई देता है। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को मिलेतुस बुलाया था (प्रेरितों 20:17)। अन्य बात के साथ उसने उन्हें चिताया कि परमेश्वर की कलीसिया की "रखवाली" या "पास्टर" करें (प्रेरितों 20:28)। 1 पतरस 5:2 की यही यूनानी क्रिया "रखवाला" को प्रेरितों 20:28 में भी प्रयोग किया गया है।

जिन्हें कलीसिया के आत्मिक अगुवे होने के कार्य का निर्वाह करना था, उन्हें संबोधित करने के लिए प्रयुक्त सभी शब्दों ("प्राचीन," "पास्टर," या "बिशप") में से, कोई भी "पास्टर" के समान बहुरंगी या विवरणात्मक नहीं है। इस्राएल के लोगों के लिए चरवाहे का भेड़ों के झुण्ड की रखवाली करना पौराणिक था। चरवाहा राजा, दाऊद, उस काल से संबंधित था जब परमेश्वर के लोग युवा और व्यापक थे। भजन 23 परमेश्वर की ओर उसके लोगों इस्राएल के चरवाहे होने के समान देखता है। श्रेष्ठ गीत चित्रित करता है कि इस्राएल की प्रेम कविताओं में भी चरवाहे के चित्रण का प्रभाव था। यीशु के सबसे यादगार दृष्टांत सदियों से स्थापित लोक वार्ताओं पर आधारित थे। चरवाहा अपनी भेड़ों के साथ दिन के चौबीसों घण्टे रहा करता था। जब कोई भेड़ बीमार होती या खो जाती तो वह जान जाता था। वह उनकी रक्षा और परवाह करता था। वह उसकी जीविका और अनुराग दोनों ही थे।

जब चरवाहे और उसकी भेड़ों के आदर्श को कलीसिया के आत्मिक नेतृत्व में निभाया जाता है, तो प्राचीन **अपने झुंड** की जिसकी वे देख-भाल करते हैं आत्मिक, भावनात्मक, और शारीरिक आवश्यकताएं जान लेंगे। वे उन्हें धार्मिकता और सत्य के मार्गों में मार्गदर्शन करते हुए चलेंगे। वे यीशु पर आश्रित रहेंगे, जो प्रधान रखवाला है (5:4; 2:25), और वे कलीसिया के प्रत्येक सदस्य के लिए परमेश्वरत्व का नमूना बनेंगे। चरवाहे के लिए अवकाश का कोई समय नहीं होता है। वह सदा उपलब्ध रहता है, जिनके लिए वह उत्तरदायी है उनके लिए सदा चिन्तित रहता है, सदा उनकी रक्षा करता है, उन्हें चंगा करता है। जब उसके दायित्वों में से कोई दुर्बल होता है, तो चरवाहा उनके आत्मिक घावों की पट्टी करने के लिए उपलब्ध होता है। यह दुर्भाग्य पूर्ण है कि बहुधा प्राचीन अपना आदर्श व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के संचालकों से लेते हैं न कि उन मैदानों से जहाँ चरवाहे अपने झुंड को ले कर जाते हैं।

पतरस ने, शब्दों "प्राचीन" और "चरवाहे या रखवाले" से, उनसे जिन्हें कलीसिया के आत्मिक अगुवे होना था, उनके कार्य करने के विषय में कुछ कहा। जब ये गुण स्थापित हो गए तब ही उसने **रखवाली करो** को जोड़ा। यद्यपि

यूनानी में यह क्रिया रूप एक कृदंत है, व्याकरण के अनुसार संभव है (हो भी सकता है) कि इसे अनिवार्य समझा जाए, “रखवाला होने” के समानान्तर लिया जाए। इस स्थिति में अनुवाद होगा, “तुम्हारे मध्य में स्थित परमेश्वर के झुंड के चरवाहे बनो और उनकी रखवाली करो।” वाक्यांश “रखवाली करो” एक यूनानी क्रिया ἐπισκοπέω *(एपिस्कोपियो)* का कृदंत रूप है। इस शब्द का संज्ञा रूप ἐπίσκοπος *(एपिस्कोपोस)* का प्रयोग प्रेरितों 20:28, 1 तीमुथियुस 3:2, और अन्य स्थानों पर हुआ है। इस शब्द के संज्ञा रूप को KJV “बिशप” अनुवाद करती है, परन्तु NASB और NIV “रखवाला” करते हैं।[3] पौलुस द्वारा फिलिप्पियों को लिखी पत्री ही एकमात्र पत्री है जिसमें “अध्यक्षों और सेवकों” का अभिनंदन में उल्लेख हुआ है (फिलिप्पियों 1:1)।

तीनों शब्द (“प्राचीन,” “पास्टर,” “रखवाला”) उनके लिए प्रयुक्त होते हैं जिन्हें मसीह की कलीसिया की अगुवाई करनी है। ये एक रोचक पच्चीकारी बनाते हैं। शब्द “रखवाला” का तात्पर्य है वह जो कलीसिया की अगुवाई करे और अधिकार रखे। उनका अधिकार बन्दूकों और तलवारों का अधिकार नहीं है, वरन उनके आत्मिक और नैतिक जीवन के उदाहरण के बल का है। कलीसिया में ऐसे समय आते हैं जब कठिन निर्णय लेने होते हैं। जब ऐसे समय आएं, तो कलीसिया के रखवालों को निर्णय का चुनाव करने का अधिकार है। कलीसिया को उन्हें प्रोत्साहन और समर्थन देना चाहिए। पौलुस ने लिखा, “हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो। और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेलमिलाप से रहो” (1 थिस्सलुनीकियों 5:12, 13)।

कलीसिया में प्राचीन की सेवकाई करने के लिए बहुत शक्ति और समय की आवश्यकता होती है। कभी-कभी यह धन्यवाद रहित कार्य होता है। प्राचीनों को कभी-कभी कलीसिया से आर्थिक सहायता मिलती है, परन्तु बहुधा ऐसा नहीं होता है। उनका परिश्रम प्रेम का होता है। वे जो उत्तरदायित्व लेते हैं वह इसलिए क्योंकि वे प्रभु की महिमा करना और उसके लोगों को बनाना बढ़ाना चाहते हैं। वे प्रभु के साथ मनुष्यों की आत्माएं बचाने में संभागी होना चाहते हैं। यह ऐसा कार्य नहीं है जिसे **किसी दबाव से** करना चाहिए। भक्त लोगों को यह कार्य तत्परता से, उत्साह से, **स्वेच्छा से** करना चाहिए। इब्रानियों के लेखक ने कहा, “वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले ले कर” (इब्रानियों 13:17)। जब भले लोग प्राचीन होने की सेवकाई स्वीकार नहीं करते हैं, तो वे उनके लिए द्वार खुला छोड़ देते हैं जो इसके लिए कम योग्य हैं। और फिर सामान्यतः इसके परिणाम अनर्थकारी होते हैं।

वर्तमान समय में यह इतना प्रचलित नहीं है कि कलीसियाओं द्वारा प्राचीनों को आर्थिक सहायता दी जाए, प्रतीत होता है कि ऐसा करना नए नियम के समय में अधिक प्रचलित था। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि प्राचीन को “लोभी नहीं होना चाहिए” (1 तीमुथियुस 3:3)। सेवकों को “नीच कमाई के लोभी” नहीं होना

चाहिए (1 तीमुथियुस 3:8), और न ही प्राचीनों को (तीतुस 1:7)। हो सकता है कि इन शब्दों का तात्पर्य केवल इतना हो कि प्राचीन और सेवक उदार हों, परन्तु यह सोचने के कारण हैं कि पौलुस ने उन्हें इसलिए लिखा क्योंकि यह आम था कि प्राचीनों को, और संभवतः सेवकों को भी, उनके कार्य का मेहनताना मिले। पौलुस नहीं चाहता था कि प्राचीन कलीसिया में ऐसे सेवकाई करें, मकानों यह कोई अन्य सामान्य जीविका है।

इसका और अधिक संकेत कि पौलुस की आशा थी कि प्राचीनों को आर्थिक सहायता मिले, 1 तीमुथियुस में बाद में आता है। पौलुस ने अपने जवान सहकर्मी को चिताया कि वह उन प्राचीनों को जो प्रचार और शिक्षा देने का कार्य करते हैं दोगुना आदर दे। उसने वैसी ही भाषा का प्रयोग किया जैसी उसने कुरिन्थियों में प्रयोग की थी जब विषय प्रचारकों की सहायता करना था। प्रेरित ने व्यवस्थाविवरण 25:4 का उद्धरण किया, “दांवते समय चलते हुए बैल का मुंह न बान्धना,” और फिर आगे कहा, “क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है” (1 तीमुथियुस 5:18; देखें 1 कुरिन्थियों 9:9, 14)। 1 कुरिन्थियों में पौलुस के मन में प्रचारक थे; 1 तीमुथियुस में वह प्राचीनों के बारे में कह रहा था। दोनों ही स्थितियों में मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।

पौलुस के समान, पतरस भी आशा रखता था कि प्राचीनों को प्रभु के लिए किए गए परिश्रम के लिए आर्थिक सहायता मिले। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्यों उसने कहा कि प्राचीनों को **नीच-कमाई** के लिये सेवकाई नहीं करनी चाहिए। वरन उन्हें सेवा **मन लगा कर** करनी चाहिए। हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि कलीसिया को अपने प्राचीनों की आर्थिक सहायता करनी चाहिए। परन्तु यह काफी स्पष्ट है कि दोनों पौलुस और पतरस इस प्रथा के प्रचलन को स्वीकार करते थे। अन्यथा कोई कारण नहीं था कि कमाई के लिए सेवकाई करने के बारे में चिताया जाए। यह चिताया जाना उचित था क्योंकि यह बहुत आम था कि अपने कार्य के लिए प्राचीनों को आर्थिक सहायता दी जाए। क्या वर्तमान कलीसिया को भी ऐसा करना चाहिए? यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है, जैसा कि तब परिस्थितियों पर निर्भर करता था जब पौलुस और पतरस ने लिखा। यदि पूरा समय लगाकर कार्य किया जाना है, और कोई प्राचीन यह उत्तरदायित्व निभाना चाहता है, तो बाइबल से इसकी स्पष्ट पूर्वतः है कि उसकी सहायता की जाए। यह भी संभव है कि कभी किसी सुसमाचार प्रचारक को प्राचीन का कार्य भी संभालना पड़े। जब वह, चाहे प्राचीन के रूप में या चाहे प्रचारक के रूप में, अपना सारा समय इस कार्य में लगाता है, तो “मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।”

वर्तमान समय में, प्रचारकों और प्राचीनों को (जब प्राचीनों को वेतन दिया जाता है) अमेरिका में वेतन निर्धारण के लिए वेतन-मानकों पर कोई उच्च स्थान नहीं दिया जाता है। उनमें से अधिकांश इससे कहीं अधिक वेतन, इससे बहुत कम सिरदर्द के साथ कमा सकते थे यदि उन्होंने किसी अन्य व्यवसाय के लिए प्रशिक्षण लिया होता। हो सकता है कि जैसा है वैसा ही बनाए रखना सर्वोत्तम है।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में, यीशु ने ऐसे चरवाहे की कहानी सुनाई जो मज़दूर के समान था (यूहन्ना 10:11-15)। परमेश्वर के राज्य में ऐसे लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है जो मात्र वेतन के लिए कार्य करते हैं। पुराने प्रचारक अपमानित अनुभव करते थे यदि कोई उनके वेतन के बारे में पूछता था। वे तुरंत यह स्पष्ट कर देते थे कि उन्हें वेतन नहीं, वरन सहायता मिलती है। वे कहा करते थे कि, "यदि कोई मुझे प्रचार करने के लिए वेतन दे सकता है, तो वह मुझे प्रचार नहीं करने के लिए भी वेतन दे सकता है।" कोई यह तर्क दे सकता है कि वेतन और सहायता में भेद करना बाल की खाल निकालना है। हो सकता है, परन्तु दोनों पौलुस और पतरस इस बात के लिए निश्चित होना चाहते थे कि कलीसिया में सेवकाई के लिए ऐसे लोग आएं जो सप्ताह के अन्त में मोटे वेतन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण बातों के लिए परिश्रम करें।

आयत 3. जब राजनैतिक पद, व्यापारी संस्थान या कलीसिया में किसी एक व्यक्ति के हाथ में अधिकार आ जाता है तो इसके दुरुपयोग की सम्भावना रहती है। अधिकार को सौंपे जाने के बिना अगुआई असम्भव है। कभी-कभी अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए एक व्यक्ति के द्वारा अधिकार प्रयोग किया जा सकता है। क्योंकि बिना उत्तरदायी नेतृत्व के कुछ करना कठिन और असम्भव सा लगता है, कलीसिया स्वयं लोगों को उत्तरदायी पद सौंपती है। इसीलिए पतरस की चेतावनी आवश्यक थी। प्रेरित ने कहा कि प्राचीन अपने **सौंपे हुए लोगों पर अधिकार न जताएँ**।

प्राचीन कोई साहब नहीं हैं। वे एक आत्मिक परिवार का नेतृत्व करते हैं जिनका प्रथम समर्पण प्रभु के लिए है जिसने उन्हें खरीदा है (1 कुरिन्थियों 6:20)। प्राचीनों के पास कोई पुलिस जैसा अधिकार नहीं होता जैसे राजनैतिक नेता करते हैं। वे धन के साथ कलीसिया पर नियन्त्रण न करें मानों यह कोई कारोबार हो। वे अपने नैतिक सदगुण और आत्मिक उपस्थिति और भला करने वाले अधिकार जो यीशु उन्हें देता है के द्वारा नेतृत्व करते हैं। प्राचीन की पदवी को प्राप्त करना कोई साहब बनना नहीं है; यह तो सेवक बनने के लिए है। ऐसा होना सम्भव है कि पतरस ने प्राचीनों को उस आधार पर यह आदेश दिया जो उसने प्रभु को कहते हुए सुना था:

> तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं, और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने (मरकुस 10:42, 43)

यीशु और पतरस दोनों ने ही अनुवादित शब्द "अधिकार जताने" के लिए एक ही यूनानी शब्द का प्रयोग किया κατακυριεύω *(कटाकुरिया)*।

"तुम्हें सौंपे गए" अर्थ को लेकर एक महत्वपूर्ण विचार रहा है। वह सौंपा जाना किस तरह का है जो प्राचीनों को दिया गया था? कठिनाई और अधिक प्रकट हो जाती है जब "तुम्हें" शब्द NASB के अनुवादकों के द्वारा जोड़ा गया

और सौंपे गए का अनुवाद बहुवचन में किया (τῶν κλήρων, *टॉन क्लेरोन)*। शब्द का शाब्दिक अर्थ है "चिट्ठी डालना," उदाहरण के लिए यहूदा के स्थान पर रखने के लिए मत्तियाह को चुनने के लिए चिट्ठी डाली गई (प्रेरितों के काम 1:26)। इसे "सौंपे गए" का अर्थ बताने के लिए अलंकार के रूप में प्रयोग किया गया है-सम्भवतः विरासत या किसी क्षेत्र में किसी उत्तरदायित्व का दिया जाना।[4] कुछ लोगों ने इस बात पर जोर दिया कि यह शब्द बताता है मण्डली में ही, प्राचीनों के लिए सदस्यों को बांट रखा था, प्रत्येक प्राचीन का निश्चित संख्या के लोगों पर उत्तरदायित्व था। इस अर्थ की तो सम्भावना नहीं है, यदि इसका कोई अन्य कारण नहीं है कि इसका नया नियम में कहीं भी प्रयोग नहीं हुआ है। सम्भवतः पतरस ने प्रभु की कलीसिया के क्षेत्र में पूरे संसार पर विचार किया हो (5:9)। "दायित्व" उन प्राचीनों को दिया गया जिन्हें पतरस ने सम्बोधित किया "भिन्न प्राचीनों या प्राचीनों के समूहों के अंतर्गत देखभाल की गई सार्वभौमिक झुण्ड के भाग हैं।"[5]

सौंपे गए लोगों पर अधिकार जताने की बजाए, प्राचीनों को **झुण्ड के लिए आदर्श** बनना है। यह अच्छे अगुओं में स्वाभाविक होता है कि वे बोलने से पहले मसीही होने के व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं। जब कि "आदर्श" के लिए 2:21 में भिन्न यूनानी शब्द का अनुवाद किया गया है, विचार वैसा ही है। प्राचीन, सभी मसीहियों की तरह मसीह में आदर्श हैं, परन्तु क्योंकि वे अगुवे हैं, आदर्श बनना उनके लिए विशेष जिम्मेदारी है। उनके प्रार्थना जीवन में, पवित्रशास्त्र के ज्ञान में, खोए हुओं की चिन्ता में, उनकी सहनशीलता में, कष्ट सहने में, उनके खरे चरित्र में, प्राचीनों को "एक आदर्श" (τύπος, *टुपोस)* होना है, क्योंकि उनको उनकी देखभाल का भार सौंपा गया है। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को बताया कि जब उसने अपने अधिकार प्रयोग करने से इनकार किया उसने ऐसा कलीसिया के समाने एक आदर्श रखने के लिए किया (2 थिस्सलुनीकियों 3:9)। मसीही अगुआई के लिए, "अधिकार" कोई क्रियात्मक शब्द नहीं है; क्रियात्मक शब्द तो "सेवा करना" है। यह तीन श्रृंखलाओं के तीन वाक्य हैं जिन्हें पतरस ने प्रयोग किया जिसका आधार है "यह नहीं ... परन्तु यह" नमूना है। प्राचीनों को (1) विवशता से सेवा नहीं करनी परन्तु प्रसन्नता से करनी है, (2) नीच कमाई के लाभ के लिए सेवा नहीं करनी परन्तु उत्सुकतापूर्वक करनी है और (3) अधिकार नहीं जताना है परन्तु आदर्श बनना है।

आयत 4. पतरस ने प्राचीनों को स्मरण करवाया कि मसीह आदर्श है। जबकि वे चरवाहे थे, वह **प्रधान चरवाहा**। पतरस तो पहले ही यीशु को "चरवाहा और तुम्हारे प्राणों का रखवाला" कह चुका है (2:25)। प्राचीन झुण्ड को चराते हैं परन्तु यीशु चरवाहों का चरवाहा है। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने यीशु को "भेड़ों का महान रखवाला" के रूप में वर्णन किया (इब्रानियों 13:20)। जैसे यीशु ने अगुआई करने, रखवाली करने और चराने की जिम्मेदारी को बड़ी विश्वासयोग्यता के साथ उन लोगों के हाथ सौंप दिया जो उसके अनुयायी थे, पतरस ने प्राचीनों को यीशु के आदर्श का अनुसरण करने के लिए कहा।

एक मसीही के पास चाहे कोई भी वरदान हैं, चाहे कोई भी अवसर प्रभु उसके लिए खोलता है, वह उन आशीषों को कैसे प्रयोग करता है उसका स्वयं जिम्मेदार है। यीशु ने कहा, “जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा” (लूका 12:48)। प्राचीनों को परमेश्वर बड़ी-बड़ी आशीषें और बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियाँ देता है। प्राचीनों को स्मरण करवाया गया कि “प्रधान चरवाहा” उन्हें पुरस्कार देगा जब वह विश्वासयोग्यता के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं। उससे वे ऐसा मुकुट प्राप्त करेंगे **जो मुरझाने का नहीं**।

नए नियम में दो शब्दों को “मुकुट” अनुवाद किया गया है। अभी तक का सबसे अधिकतर στέφανος *(स्टेफानोस)* है। इस शब्द का मुख्य अर्थ “विजेता की पुष्प माला।” लगभग सभी यूनानी भाषी नगर खेल प्रायोजित करते थे जिसमें उनके अपने धावक आस पास के नगरों के साथ मुकाबला करते थे। इसके अतिरिक्त यूनानी “पेन-हेल्लेनिक” खेल उत्सव मनाया करते थे, सभी यूनानियों के लिए खेल प्राचीन पेन-हेल्लेनिक खेल ओलम्पिया के होते थे। उसमें कोई दूसरे स्थान के पुरस्कार नहीं होते थे। जीतने वाला उस क्षेत्र की जहाँ खेलों का आयोजन किया जाता था पारम्परिक हरियाली से बनी पुष्प माला प्राप्त करता था। दूसरा शब्द “मुकुट” अनुवाद किया गया जिसका मात्र प्रकाशितवाक्य में ही प्रयोग किया गया। यह διάδημα *(डियाडेमा)* है। इस शब्द का सटीक अर्थ “शासक का मुकुट” है। यह समृद्धि और पद को दर्शाता है। इन दोनों शब्दों के बीच की भिन्नता को स्पष्ट रूप से हमेशा नहीं बताया जाता। इस तरह से प्रकाशितवाक्य 14:14 में, यीशु सोने का मुकुट *(स्टेफानोस)* पहने है, परन्तु प्रकाशितवाक्य 19:12 में, वह कई मुकुट *(डियाडेमा)* पहनता है।

यीशु के द्वारा पहना गया काँटों का मुकुट *स्टेफानोस* था (मत्ती 27:29)। लोगों ने उसके सामने झुककर उसका उपहास उड़ाया और उसे “यहूदियों का राजा” कहा। स्पष्ट रूप से उस संदर्भ में उस मुकुट को शासक का मुकुट समझा जाता है। सही रूप से कहा जाए तो शासक का मुकुट डियाडेमा था परन्तु यह देखना भी कठिन नहीं है कि यह शब्द कुछ संदर्भों में परस्पर बदला है। “मुकुट” शब्द का अर्थ जब विषय विश्वासियों के लिए स्वर्गिक पुरस्कार का हो तो इसका अर्थ मात्र शैक्षिक महत्व नहीं रह जाता। जिस पुरस्कार की मसीही लोग आशा करते हैं वह मसीही जीवन के मूल्यों और आदर्शों के विषय में बहुत कुछ बताता है। इससे एक भिन्नता उत्पन्न होती है कि क्या शब्द का अर्थ “पुष्प माला” जो खेलों में दी जाती है या एक “मुकुट” जो कोई राजा पहनता है। यदि यह पहले वाला है तो एक मसीही के लिए मुकुट जीत का प्रतीक है। मसीह में एक विश्वासी पाप और मृत्यु पर जीत प्राप्त करता है। यदि शब्द का अर्थ “डियाडेमा” शासक का मुकुट है तो सुझाव यह है कि मसीहियों का लक्ष्य स्वर्गिक क्षेत्रों में भरपूरी और सामर्थ्य का आनन्द लेना है।

यह ध्यान देने योग्य है कि पतरस ने कहा “प्रधान चरवाहा” “न मुरझाने वाला महिमा का मुकुट” देगा। डियाडेमा शासक का मुकुट जो मुरझाने वाला है कोई उसकी आशा नहीं करेगा। यह सोने का बना और बहुमूल्य हीरों से जड़ा हुआ

धुंधला या मैला पड़ सकता है, परन्तु वह मुरझाएगा नहीं। फूलों से बनी हुई माला, दूसरी ओर शीघ्र ही मुरझा जाएगी। पतरस की तरह, पौलुस ने स्वर्गिक पुरस्कार को अविनाशी मुकुट के रूप में बताया (1 कुरिन्थियों 9:25)। हरियाली तो क्षण भर की होती है। जब पतरस या पौलुस ने विश्वासियों के स्वर्गिक पुरस्कार के रूप में मुकुट के विषय कहा दोनों ही जीत के विचार को बताना चाहते थे शासन के विचार को नहीं। यदि मसीहियों का इस जगत में अन्य लोगों पर अधिकार जताने का लक्ष्य नहीं है तो उनको आने वाले युग में शासक क्यों बनना चाहिए? मुकुट का विचार समृद्धि और पद के रूप में मसीही के विचार में अपना मार्ग बना चुका है। विश्वासी इसे अपने भजनों में और अपनी-अपनी प्रार्थनाओं में प्रकट करते हैं परन्तु यह एक गलत आदर्श को प्रकट करता है। स्वर्गिक क्षेत्र चाहे किसी भी तरह का हो, शान्ति के राजकुमार की ओर से दिया गया पुरस्कार सम्भवतः "एक घर, वस्त्र, और एक मुकुट" का प्रतीक है। यह विश्राम, जय और दासत्व का प्रतीक है।

स्वयं को विनम्र रखो (5:5-8)

[5]इसी प्रकार हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। [6]इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। [7]अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। [8]सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जन वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।

प्राचीनों के लिए नेतृत्व करने को ऐसे लोग होने चाहिए जो अनुसरण करने के लिए तैयार हों। कलीसिया एक मन के लोगों का राज्य है, परमेश्वर को समर्पित और वह आदर्श जो परमेश्वर ने उनके सम्मुख रखे हैं। इसके लिए कोई दबाव नहीं है, कोई अनिवार्यता नहीं है। यह सच्च है कि घमण्ड और हेकड़ी परमेश्वर के विरुद्ध मानसिकता के मूल तत्व हैं,[6] परमेश्वर स्वीकृत मानसिकता के लिए विनम्रता और समर्पण आवश्यक बातें हैं। समर्पण झुंझलाहट हो सकती है। कोई व्यक्ति समर्पण करने के लिए तैयार हो, कम से कम अवसर पर दूसरों पर अपना न्याय स्वीकार करने के लिए। शासकों के प्रति समर्पण (2:13-17), दासों का अपने स्वामियों के प्रति समर्पण (2:18-20), और पत्नियों का अपने पति प्रति समर्पण (3:1-7) पतरस पहले ही इनके विषय लिख चुका है। यहाँ वह युवाओं से प्राचीनों के अधीन होने की बिनती कर रहा है। मसीहियों के लिए, अधीनता दी गई है, दबाव से नहीं। यह तो परमेश्वर के सामने विनम्रता से खड़े होने का स्वाभाविक परिणाम है। यह स्वीकार किया गया है कि जीवन एक भेद है, कि जन्म, मृत्यु और इसके बीच कई बातों पर हमारा कोई नियन्त्रण नहीं है। यह एक

अंगीकार है कि यह सब परमेश्वर के नियन्त्रण में है।

आयत 5. क्योंकि कलीसिया में "प्राचीन" एक पदवी ठहराई गई है, तो पतरस के लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह **युवाओं** को अधीनता का निर्देश दे। इन पदों का अर्थ यह है कि कलीसिया में नेतृत्व पुरुषों के द्वारा लेना है। क्योंकि बड़े लोगों को नेतृत्व करना है, कलीसिया नियमन कार्यों में अधीनता का आदेश युवाओं को दिया गया है। आधुनिक पश्चिमी सभ्यता में जहाँ महिलाएँ नागरिक, आर्थिक और कलीसिया के जीवन में अधिक सक्रिय हैं, अधीनता की बुलाहट उन पर भी लागू होती है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि पतरस ने स्वयं "युवाओं" को सम्बोधित नहीं किया (νέος, *निओस)* परन्तु "छोटों" को किया (νεώτερος, *नियोटेरोस)*। सम्भवतः प्रेरित ने तुलनात्मक विशेषण का प्रयोग किया यह जानते हुए कि उसकी शब्दावली पूर्ण रूप से समानांतर नहीं थी। "युवाओं" से उसका सम्बन्ध काल क्रमबद्ध आयु से था, परन्तु "प्राचीन" से उसका अर्थ कलीसिया में पदवी से था।[7] एक छोटा सा संदेह हो सकता है कि **अपने प्राचीनों के अधीन रहो** यह कलीसिया के पद को दर्शाता है किसी वृद्ध व्यक्ति के सामान्य भाव में नहीं। पतरस ने मसीही जो "प्राचीन" नहीं थे अपने अगुओं के न्याय को मानने के लिए, वे जो कार्य करते हैं उनका समर्थन करने के लिए, उनके कार्य कारण उनको आदर देने के लिए, और उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए बुलाया।

उन लोगों के लिए जो अधीनता को प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझते हैं या अपने विचारों को ठहराए गए प्राचीनों से उत्तम समझते हैं, पतरस ने उन्हें स्मरण करवाया कि विनम्रता एक सद्‌गुण है। **तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो।** प्रेरित ने प्राचीनों के प्रति अधीनता को मानसिकता के व्यापक क्षेत्र में रखा जो कि सभी विश्वासियों के सम्बन्धों को चित्रित करता है। अनुवादित शब्द "कमर बांधे रहो" (ἐγκομβόομαι, *इंकोम्बूमाय)* यह दुर्लभ शब्द है, नया नियम में मात्र इसी स्थान पर आया है। यह विशेष रूप से एक वस्त्र का उल्लेख करता है जो एक व्यक्ति के चारों ओर लिपटा होता है, लम्बे कुरते या एक तहबंद (एप्रन) की तरह। यह शब्द इस बात का स्मरण कराता है कि यीशु ने न केवल विनम्रता का पाठ ही सिखाया; उसने इसे व्यावहारिक रूप से करके भी दिखाया। जब वह और उसके शिष्य ऊपरी कमरे में थे क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की रात, यीशु ने अपने बाहरी वस्त्र उतारे, पानी का एक बर्तन लिया, और 12 शिष्यों के पाँव धोए। उसने यह कहते हुए अपनी बात को पूरा किया, "तुम मुझे गुरु, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वहीं हूं। क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो" (यूहन्ना 13:14, 15)। यीशु का जीवन पतरस के उपदेश की व्याख्या है, "एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो।"

जैसा उसने इस पत्र में अन्य स्थानों पर किया (1:24, 25; 2:6-8; 3:10-12), पतरस ने अपने आदेशों का पवित्रशास्त्र से उल्लेख देते हुए समर्थन और उन्हें दृढ़ किया। यह नीतिवचन 3:34 से है (LXX): **परमेश्वर ठट्ठा करनेवालों से**

वह निश्चय ठट्ठा करता है और दीनों पर अनुग्रह करता है। याकूब ने भी इसी भाग का उल्लेख किया (याकूब 4:6), पतरस के पहले पत्र और प्रभु के भाई के पत्र में कई रुचिकर बातों में से यह एक है। नीतिवचन का उद्धरण बताता है कि "अहंकार" "दीनता" का विलोम है। परन्तु, समकालीन व्यवहार में कभी-कभी "अहंकार" अच्छी तरह से किए गए कार्य की संतुष्टि में या आत्म-सम्मान के भाव में प्रस्तुत करता है। अनुवाद "परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है परन्तु दीनों पर दया करता है" यह पतरस के आदेश के भाव को लेता है। "दीन" उन व्यक्तियों का प्रतीक है जो प्राचीनों के प्रति अधीन होने को तैयार हैं, परन्तु उद्धरण अधीनता के अन्य स्तर की ओर ले जाता है। यह परमेश्वर के लोगों का गुण है जो स्वयं से दृष्टि हटाते हैं और दूसरों की जरूरतों को देखते हैं। "आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।" (रोमियों 12:16)।

आयत 6. जिन कलीसियाओं को पतरस ने सम्बोधित किया उनमें एक कहावत रही है जो इस तरह से है : **परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।** यदि ये शब्द कहावतें थीं तो ये बताती हैं क्यों याकूब ने मिलती जुलती अभिव्यक्ति को प्रयोग किया (याकूब 4:10)। किसी व्यक्ति का स्वयं को दीन करने को तैयार रहना उसकी इस तैयारी के बाहर नहीं है अर्थात अधीन होना। किसी भी स्तर की अधीनता (शासन, परिवार या कलीसिया) परमेश्वर के अधीन होते हुए एक दूसरे को सहने के लिए तैयार रहते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि परमेश्वर के विरुद्ध मानवीय विद्रोह की जड़ का परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीन न बनने की अनिच्छा से आरम्भ होता है। एलन एम. स्टीब्बस सही था जब उसने देखा इस भाग का यह तात्पर्य है कि परमेश्वर अपने लोगों को निष्क्रिय, अनैच्छिक आज्ञाकारिता से बढ़कर बुलाता है। परमेश्वर अपने लोगों की सक्रिय सहभागिता को चाहता है, उनके तत्पर भरोसे और उनके विश्वास को चाहता है।[8] इसका विकल्प परमेश्वर के सामने स्वयं को उठाना और उसके न्याय का सामना करना है।

भले ही यह एक असत्य सा हो, ऊँचा उठने का मार्ग अधीनता से ही है। मानवता का सामान्य अनुभव इस सिद्धान्त का साक्षी है : "जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करता करेगा" (यूहन्ना 12:25)। एक जो अपनी ही बनाई हुई कामनाओं पर अपनी ऊर्जा लगाता है वह उन भलाइयों को खो देता है जो जीवन प्रदान करती हैं। आत्म-सम्मान कभी कार्य नहीं करता। दाऊद अपने सोए हुए शत्रु से बढ़कर धर्मी नहीं था जब वह उसके ऊपर खड़ा था और कहा, वास्तव में, "परमेश्वर ने उसे चुना है। या तो वह उसे उठाए या दीन करे। मैं परमेश्वर के अभिषिक्त के विरुद्ध हाथ नहीं उठाऊँगा" (देखें 1 शमूएल 26:9-11)। यीशु ने एक व्यक्ति के विषय दृष्टांत बताया जो किसी भोज में गया और उसने भोज के ऊँचे स्थान पर बैठना चाहा। अपने दृष्टांत के अन्त में उसके शब्द पतरस के शब्दों से भिन्न नहीं थे : "और जो कोई अपने आप

को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा" (लूका 14:11)।

आयत 7. आत्म सम्मान के विपरीत, किसी व्यक्ति की दीनता का उपाय **अपनी चिन्ता** परमेश्वर पर डालना है। KJV की व्याख्या है, "अपनी सारी चिन्ता उस पर डाल दो," यह थोड़ी सी भ्रमित करने वाली व्याख्या है। आधुनिक अंग्रेजी भाषा में "care" इसका अर्थ है एक व्यक्ति दूसरे की परवाह करता है। यह एक अच्छी बात है। पतरस ने जो यहाँ शब्द प्रयोग किया है उसका अर्थ है "चिन्ता" (μέριμνα, *मेरीमना)*, जो अच्छी बात नहीं है। "चिन्तित होना, चिन्ता करना, जीवन की अनिश्चितताओं से दबाव की प्रवृत्ति मानवीय स्थिति के अन्दर ही बनी है। गरीबी, भूख और अन्य समस्याओं की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है जो उसके रोजाना के जीवन में घटित होती है। अपने ऊपर लदे हुए बोझ से परेशान, मनुष्य स्वयं को उसके सामने छुटकारे के लिए तकदीर की कल्पना करता है जिसके सामने वह निर्बल खड़ा होता है।"[9] पतरस ने अपने पाठकों को आश्वासन दिया कि वे तकदीर या संयोग के भेजे हुए नहीं थे। परमेश्वर संसार पर अपना नियन्त्रण रखता है; हम अपनी परेशानियाँ उस पर डाल सकते हैं।

ऐसा लगता है कि पतरस अपने शब्दों के लिए भजन 55:22 पर निर्भर है, भले ही यह सीधा उद्धरण नहीं है: "अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा।" कई भजन दमदार आदेश प्रदान करते हैं जो पतरस के बुलावे को दृढ़ करते हैं, उदाहरण के लिए, "जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं: उन सभों के वह निकट रहता है" (भजन 145:18)। भले ही शब्दावली इतनी मिलती जुलती नहीं है, मत्ती 6:25-34 के भाव मिलते जुलते हैं: "अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?" (मत्ती 6:25)। पतरस के लिए और यीशु के लिए भी, "चिन्ता एक जटिल फुसलावा है कि परमेश्वर असमर्थ है या हमारी भलाई को देखने के लिए विमुख हो गया है।"[10]

एक उचित कारण है कि क्यों परमेश्वर के लोग बड़े हियाव के साथ अपनी चिन्ताओं को उस पर डाल सकते हैं। प्रेरित ने अपने पाठकों को यह कहते हुए भरोसा दिलाया, **उसको तुम्हारा ध्यान है।** चाहे कोई मसीह के नाम के कारण सताव का सामना करे, जैसा पतरस के पहले पाठकों ने किया, या आर्थिक असुरक्षा या रोग या मृत्यु का सामना किया, एक मसीही की चाहे कोई भी चिन्ता क्यों न हो, वह इस बात से हियाव बांध सकता है कि परमेश्वर को उसका ध्यान है। परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा अपने लोगों पर व्यक्तिगत पिता दर्शाया। वह कोई ऐसी उदासीन शक्ति नहीं जिसने पृथ्वी का बनाया और फिर इससे दूर हो गया। वह अपने लोगों के जीवनों में जीवित है। उसकी अनोखी देखभाल हमेशा कार्य करती रहती है। "परमेश्वर प्रेम है : जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है" (1 यूहन्ना 4:16)। प्रज्ञा ग्रंथ (Wisdom of Solomon in Hindi) नामक अप्रामाणिक

पुस्तक कई विचार प्रदान करती है: “क्योंकि कोई ऐसा परमेश्वर नहीं है जो सभी लोगों की देखभाल करे।”[11]

आयत 8. यह आदेश जिसे विश्वासी स्वयं लेते हैं, अपनी जिम्मेदारी गम्भीरता से अपनी नियति जो पवित्रशास्त्र में सामान्य है लेते हैं। **सचेत हो**, पतरस ने लिखा। शब्द “सचेत” (νήφω, *नेफो)* इसका यूनानी भाषा में शाब्दिक अर्थ है जैसा कि हिन्दी भाषा में है, नशे में न रहें। परन्तु इसे अक्सर संतुलित भाव और आत्म-संयम में रहने के लिए प्रयोग किया गया है, इसलिए गम्भीर और विचारशील होना है। गम्भीर होने का अर्थ यह नहीं कि उदास, दुखी, रूखा चेहरा, जीवन में कोई आनन्द नहीं। इसका अर्थ यह है कि मानवीय जीवन में कुछ है। जीवन आखिरकार एक गम्भीर बात है।

प्राचीन युग और आधुनिक जगत से अन्यजाति के विचार, मानवीय अस्तित्व इस स्तर तक घट गया है कि किसी भी मानव प्राणी का जीवन छोटा हो गया है। यूनानी-रोमी बहु-देववादी लोग यह सोचते हैं कि नसीब सबको अपने नियन्त्रण में रखता है। मृत्यु का अर्थ या तो विनाश या किसी धुंधले संसार में देश-निकाला है। किसी साधु ने एक कुत्ते के विषय कहानी बताई जो किसी गाड़ी के पीछे बंधा हुआ था। जब मालिक ने उस गाड़ी को चलाकर किसी अन्य नगर में जाना चाहा तो कुत्ते ने उसके साथ न जाने का निर्णय किया। गाड़ी ने उसे खींच लिया और वह पत्थरों से टकराने लगा और नियत स्थान तक पहुँचने तक वह लहू-लुहान और घायल हो गया। वास्तव में, साधु ने कहा, “ज़रा विचार करो, कुत्ते का अन्त वहीं हो गया था चाहे वह गाड़ी के पीछे चलता या उसका विरोध करता। कुत्ते की तरह, आपका जीवन समाप्त हो जाएगा जो भी नसीब में निर्णय कर दिया है। यह तो आप पर निर्भर है कि आप वहाँ कैसे जाना चाहते हैं। गाड़ी के पीछे चलते हुए। आवेश न बनाए और जीवन बेहतर होगा। अपने ही विकल्पों को इतनी गम्भीरता से न लें। किसी भी वस्तु में अधिक भरोसा न करें। आप जो करते हो या जिस पर विश्वास करते हो क्या वह सब महत्वपूर्ण नहीं है।”

जब प्राचीन जगत से तुलना करते है, वह प्रभाव आधुनिक समय में आ गए हैं। यह नसीब नहीं परन्तु समय है जो शासन करता है। विज्ञान बहुतों के लिए ईश्वर है जो यह विश्वास करते हैं कि मानवीय जीवन विकासवाद प्रक्रिया का उत्पाद है और इससे बढ़कर कुछ नहीं। मानव अन्य प्राणियों से अवरोध अँगूठे और अपने दिमाग के आवरण के घुमाव में भिन्न है, जैसे तिल चट्टा अपने कठोर कवच और 6 टाँगों से भिन्न है। दोनों ही अन्य जीवों में जीव हैं। मानव की तुलना में तिल चट्टा के लिए जीवन गम्भीर नहीं है। एक मरता है तो अगली पीढ़ी उसका स्थान ले लेती है। इसके विपरीत, पतरस ने कहा, “सचेत रहो।” भाव यह है, “तुम परमेश्वर की रचना हो। आप जो विश्वास करते और काम करते हो, वह महत्वपूर्ण है।”

जब कोई अपने जीवन को गम्भीरता से लेता है, जब वह “सचेत” होता है, तो यह भी है कि उसे **जागते रहना** चाहिए। क्योंकि तुम्हारा **विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।**

1 पतरस में “शैतान” के लिए यही एकमात्र उद्धरण है। “शैतान” शब्द पत्री में नहीं आता है। ऐसा लगता है कि पतरस किसी व्यक्तिगत प्राणी के विषय चेतावनी दे रहा है जो परमेश्वर और मनुष्य का विरोधी है। “विरोधी” (διάβολος, *डियाबोलोस)* शब्द का अर्थ “निन्दक” है। नया नियम में कभी-कभी इसका प्रयोग सामान्य अर्थ के साथ किया जाता है (2 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 2:3)। इसका अर्थ है कि यह इब्रानी भाषा के शब्द שָׂטָן *(शैतान)* के अनुरूप है, “निन्दक” या “दोष लगाने वाला।” 1 पतरस में शैतान विरोधी है। मानव जाति के लिए वह जो भी सोचता है वह उनका नुकसान ही है। वह आत्माओं को निगल जाता हैं, अनन्त विनाश की ओर ले जाता है। शैतान की तुलना एक सिंह से की जानी चाहिए जबकि यीशु भी “यहूदा के गोत्र का सिंह है” (प्रकाशितवाक्य 5:5)।

व्यक्तिगत प्रलोभन और पाप में शैतान की भूमिका को समझना कठिन है। याकूब कहता है कि प्रलोभन का अर्थ अपनी ही अभिलाषाओं में खिंचना (याकूब 1:14) है। यूहन्ना ने कहा कि व्यवस्था को तोड़ना ही पाप है (1 यूहन्ना 3:4), इसका अर्थ है कि कोई व्यक्ति पाप का चुनाव करता है।

बाइबल में शैतान और विरोधी के लिए पाप में खींचने का आदर्श रूप उद्धरण लेना प्रलोभन है। इस तरह का बाइबल भाग ऐसा करने के लिए कठिन है। कुछ लोग शैतान को एक मिथ्या धारणा के रूप में टाल देना चाहते हैं जो यहूदियों के बीच बाबुल के समय के दौरान उठी थी। इसमें भी अपनी कठिनाइयाँ हैं। मसीही शैतान के विषय जो कह सकते हैं वह सीमित है। वह व्यक्तिगत प्राणी होकर प्रकट होता है और परमेश्वर की सृष्टि को प्रलोभन में फसाकर वचन और कर्म से परमेश्वर का इनकार करने के द्वारा परमेश्वर का अपमान करने पर लगा रहता है। इतना कुछ निश्चित है: शैतान कोई बुरा ईश्वर नहीं है, सृष्टिकर्ता के साथ सह-समान और सह-सनातन है। उसकी सामर्थ्य परमेश्वर के अधीन है। उस दिन जब प्रभु आएगा तो वह इसको पराजित करेगा।

आपका भाईचारा विश्व भर में (5:9-11)

9विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं। 10अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। 11उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।

प्रेरित अपनी पत्री के अन्तिम शब्दों की ओर मुड़ा। अपने पाठकों के सताव लगातार उसके सामने रहते थे, इसलिए यह उचित था कि प्रेरित उत्साही शब्दों के साथ समाप्त करे। कुछ भी हो, यह शैतान ही था जिसने सताव को उत्प्रेरित किया था। पाठकों को उसका सामना करना था और उनको इस बात से सान्त्वना

लेनी थी कि जिन कष्टों का वे सामना कर रहे हैं यह सब भाइयों पर ही था। उसके बाद, उस महिमा के विषय स्मरण करवाया गया जो उनकी प्रतीक्षा में थी जब परमेश्वर युग के अन्त में उसे लाएगा।

आयत 9. याकूब और पतरस दोनों ने ही लिखा कि शैतान का सामना करना चाहिए, परन्तु याकूब ने इस प्रतिरोध को सीधा परमेश्वर की अधीनता के साथ जोड़ा है (याकूब 4:7)। पतरस का विचार कोई दूर का विचार नहीं था जब उसने कहा, **उसका सामना करो, विश्वास में दृढ़ रहो।** एक विश्वासी शैतान का सामना करता है जब वह विश्वास के समाज के साथ अपने विश्वास की पुष्टि करता है (1:17-19)। शैतान का सामना करने का अर्थ है "यीशु मसीह के प्रकट होने पर" विश्वासयोग्य पाया जाना (1:7)। इसका अर्थ जो आपके विरुद्ध बुरा कहते हैं उनके विरुद्ध बुरा न कहना (2:23; 3:9)। इसका अर्थ जीवन के उच्च मूल्यों के लिए अपने समर्पण में लगातार बने रहना (4:3, 4)। मसीह के अंगीकार के लिए प्रयास, प्रतिरोध और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। मसीही जीवन अंगीकार, मसीह के नाम में डूबने, अपने मित्रों की सहायता से और भावनात्मक जोश से आरम्भ होता है। उसके बाद, वास्तविकता आरम्भ होती है। जैसा कि बीज बोने वाले दृष्टांत में, कुछ भूमि की गहराई में गिरे। बहुत से सांसारिक जीवन की ओर मुड़ गए। विश्वास की दृढ़ता, प्रार्थना, दृढ़ता और संगी विश्वासियों की सहायता की उन लोगों को आवश्यकता होती है जो शैतान का सामना करेंगे, अंत तक दृढ़ रहेंगे।

पत्री में यह चौथी बार पतरस ने अपने पाठकों के कष्टों को स्पष्ट रूप से सम्बोधित किया (1:6-9; 3:13-17; 4:12-19; 5:9, 10)। जब कोई कष्ट उठाता है तो यह जानने से सान्त्वना मिलती है कि ऐसे भी भाई हैं जो इस कठिन परीक्षा में सहभागी हैं। प्रेरित चाहता था उसके पाठक जानें कि उनके **भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे** थे। इस पत्री में इस कथन से बढ़कर नहीं है जो ऐतिहासिक प्रश्न लिए हुए है। यह ध्यान देने योग्य है कि प्रभु की मृत्यु के लगभग 35 वर्ष बाद, पतरस ने विश्व स्तरीय संगति के विश्वासियों को लिखा। जै

से वे बिखर गए थे, मसीही एक दूसरे को सम्भालते थे और एक दूसरे की सहायता करते थे। विश्व स्तर पर उनमें संगति और भाईचारा था। जॉन स्टॉट ने सही टिप्पणी की थी, "बाइबल की विश्वसनीय कलीसिया सुरक्षित, आत्म संतुष्ट, आरामदायक, स्वार्थी, पलायन वादी थोड़ा धर्म नहीं है। यह प्रभावशाली, अभिकेन्द्रीय बल है जो कि हमारी संकीर्णता को उखाड़ फेंकता है और परमेश्वर के संसार में हमें साक्षी और सेवा के लिए भेजता है।"[12]

अन्य बातों के बीच प्रेरित ने अपने पाठकों को स्मरण करवाना चाहा कि वे उस आंदोलन के अग्रणी हैं जो बढ़ रहा है और संसार को जीत रहा है। कुलुस्सियों को पौलुस ने लिखा कि जिस सुसमाचार पर उन्होंने विश्वास किया था "वह फल ला रहा है और संसार भर में बढ़ रहा है जैसे उनके बीच बढ़ा था" (कुलुस्सियों 1:6; देखें रोमियों 10:18)। पौलुस ने सुसमाचार न केवल यरूशलेम और इल्लुरिकुम तक पहुँचाया (रोमियों 15:19) उसका सपना स्पेन जाने का भी था

(रोमियों 15:24)। पौलुस के पत्रों और प्रेरितों के काम की पुस्तक से हम पौलुस के मिशनरी कार्य के विषय थोड़ा बहुत जानते हैं। हम पतरस के विषय और वास्तव में प्रचारकों और शिक्षकों की संख्या नहीं जानते जिन्होंने सारे साम्राज्य में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक मसीह के संदेश को पहुँचाया था।

आयत 10. वे मसीही जो अपने आस पास के मूर्तिपूजक लोगों में रहते थे और कष्ट सहते थे क्योंकि उन्होंने मसीह का अंगीकार किया वह स्वयं से और अन्य लोगों से यह कठिन प्रश्न पूछते होंगे। "जिस परमेश्वर की ओर वे मुड़े हैं क्या वह उनकी रक्षा करेगा? उसने रक्षा क्यों नहीं की?" उन्होंने उस समय उपहास और पक्षपात का सामना नहीं किया था जब उन्होंने उन देवताओं की पूजा की थी जिनकी उनके मित्र और परिवार के लोग करते थे। परमेश्वर ने इन बातों को क्यों होने दिया? पतरस का प्रत्युत्तर था कि यह बातें अब नहीं होंगी जैसा होती आ रही थीं। **तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद ... जिसने तुम्हें बुलाया मसीह में अपनी अनन्त महिमा [तुम्हें देगा,]** यही प्रत्युत्तर प्रेरित ने (1:8) में पहले दिया था। कष्ट का सामना करके पतरस ने कहा, "अपनी दृष्टि ऊपर रखो।" बहुत वर्ष पहले, भजनकार उनके कष्टों को उसी तरह से समझ गया था। बुराई का सामना करना, उन्होंने प्रत्युत्तर दिया कि यह तो कुछ ही समय के लिए है। अन्ततः परमेश्वर ही विजयी होगा। "निश्चय तू उन्हें फिसलने वाले स्थानों में रखता है; और गिराकर सत्यानाश कर देता है" (भजन संहिता 73:18)। भजनकार ने आगे लिखा, "स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता" (भजन संहिता 73:25)।

पतरस का प्रत्येक कथन संक्षेप टिप्पणी कहलाता है। **अनुग्रह का** परमेश्वर है जिसकी देखभाल में उन्होंने स्वयं को समर्पित किया था। 4:10 में प्रेरित ने "परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह" का वर्णन किया। यीशु मसीह के परमेश्वर में अनुग्रह को सर्वोत्तम स्तर माना गया है। परमेश्वर के साथ अनुग्रह कभी समाप्त नहीं होता है; यह उसके अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पतरस की पत्री के ग्रहण करनेवालों के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव किया गया, जब वे पापों से बचाए गए और मसीह में बपतिस्मा लिया (3:21)। वे परमेश्वर के अनुग्रह में रहे; फिर भी उन्हें उस अनुग्रह को पहचानना था। वे उस दिन की प्रतीक्षा में रहते थे।

वचन "... परमेश्वर ... जिसने [उनका] अपनी अनन्त महिमा में बुलाया" पत्र के आरम्भिक पदों को स्मरण करता है। प्रेरित ने अपने पाठकों का "चुने हुए निर्वासन" के रूप में वर्णन किया। "वे आज्ञाकारिता और यीशु मसीह के लहू के छिड़काव से" परमेश्वर के द्वारा "पहले ही से जाने गए" थे। "प्रभु यीशु के मृतकों में से जी उठने के द्वारा एक नई आशा में परमेश्वर ने उनको नया जन्म दिया।" मसीहियों के लिए महिमा का आरम्भ हुआ जिसे पतरस ने सम्बोधित किया, परन्तु महिमा जिन आशीषों का उन्होंने आनन्द लिया उससे बढ़कर थी। यह "अनन्त महिमा" थी। शब्द महिमा गुणवत्ता और मात्रा दोनों की ओर संकेत करते हैं उसे अभी भी समझना था। कष्टों का बोझ सहनीय था जब महिमा की पृष्ठ भूमि की समझ आ गई।

चार अन्तिम क्रियाओं के साथ, उनके प्रभावशाली अभिकथन में, पतरस ने अपने पाठकों को "अनन्त महिमा" पूर्ण समझ होने तक दृढ़ रहने के लिए उत्साहित किया। वर्तमान समय में, प्रेरित ने प्रतिज्ञा की, परमेश्वर स्वयं उनको **सिद्ध, दृढ़, बलवन्त और स्थापित** करेगा। यूनानी में एक दृढ़ सर्वनाम जोड़ा गया है जिसका प्रभाव इस कहावत पर है, "आप इस बात से आश्वस्त हों कि यह परमेश्वर जिसने आपको बुलाया है इन सब बातों को करेगा।" प्रत्येक शब्द का अपना बारीक भेद है, भले ही हमें प्रत्येक में से पाए हुए अर्थ के साथ बड़ा व्यवहार नहीं करना चाहिए। इस तरह से क्रियाओं को अपने लिए तोड़ मरोड़कर अर्थ निकालने से परमेश्वर की अति सामर्थ्य ने अपने बुलाए हुए लोगों को सम्भाले रखना है जब तक कि उसकी महिमा प्रकट न हो जाए।

शब्द "सिद्ध" का अनुवाद (καταρτίζω, *कटारटजिओ)* NIV में "सुधारना" लिया गया है। यह शब्द मत्ती 4:21 में यह कहने के लिए प्रयोग किया गया कि ज़बदी के पुत्र अपने जाल "सुधार" रहे थे। भाव यह है कि परमेश्वर अपने लोगों को सुधारता है जब वे ठोकर खाते हैं; वह उनके पापों को क्षमा करता है। वह उन्हें "सुधारने" और उन्हें "दृढ़" करने में सक्षम है। शब्द "स्थिर करना" (στηρίζω, *स्टेरिज़ो)* किसी वस्तु को सुरक्षित रूप से स्थिर करना है ताकि कोई भी उसे हिला न सके। धनी और लाज़र की कहानी में "एक भारी गड़हा ठहराया गया है" (लूका 16:26) का वर्णन करने के लिए यीशु ने उसी शब्द का प्रयोग किया। लिया गया शब्द "बलवन्त करना" (σθενόω, *एस्थेनू)* का अर्थ पहले वाले शब्द के बहुत नजदीक है। अन्तिम शब्द "स्थापित करना" (θεμελιόω, *थेमेलिओ)* का अर्थ "दृढ़ नींव पर बना" है। परमेश्वर मसीही लोगों को स्थिर नींव पर बनाएगा, अच्छी तरह बनाए हुए नगर या बड़े घर की तरह।

आयत 11. 4:11 में लिखे प्रेरित के स्तुति गान से यह छोटा है। 4:11 में विषय यीशु था और यहाँ विषय परमेश्वर है। शब्द जो एक की महिमा करते हैं दूसरे की महिमा करते हैं। यूनानी भाषा के वाक्य में क्रिया की अभिव्यक्ति नहीं है। NASB अनिवार्य या अनुकूल भाव में क्रिया को लगाता है : **उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।** स्तुति गान और भी दृढ़ हो जाता है जब संकेतक भाव में क्रिया लगाई जाती है : "उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे।" क्योंकि पतरस ने भावी संकेतक में चार क्रियाओं का प्रयोग किया, ऐसा सम्भव है कि यहाँ पर संकेतक को बरकरार रखा जाना चाहिए।

अनुप्रयोग

उचित शब्द खोजना (5:1-11)

ऐसा कहा गया है कि सही शब्द का प्रयोग और लगभग सही शब्द में वैसा ही अन्तर है जैसा बिजली और जुगनू में होता है। ज्यों-ज्यों पतरस का पत्र खुलता है, हमने पाया कि उसके शब्दों में बिजली समान सामर्थ्य है। और यह इस तरह से अन्त तक रहती है। अन्तिम अध्याय में, तीखी शैली में एक के बाद एक आदेश

आता है : “चरवाहे बनो!” “सेवा करो!” “अधीन रहो!” “स्वयं को विनम्र करो!” “अपनी चिन्ताएँ प्रभु पर डाल दो!” “संयमी रहो!” “चौकस रहो!” “सामना करो!” “दृढ़ रहो!” आदेशों के बीच-बीच में सराहना और सान्त्वना के शब्द।

पतरस ने अपने पाठकों को परामर्श और निर्देश दिए जिनकी उन्होंने बारहों में से एक से इच्छा और आशा की थी, जिन तीनों ने प्रभु यीशु मसीह के आस पास आंतरिक दायरे बनाए थे। यीशु नासरी के शिष्य होने के नाते आज्ञार्थक क्रियाओं से बढ़कर वे सुनने में अधिक लगे हुए थे-परन्तु आज्ञार्थक क्रियाएँ भी असंगत नहीं हैं। मसीह पर भरोसा करने के लिए उसको सुनना है और उसका पालन करना आवश्यक है। व्यक्ति उद्धार पाने के लिए आज्ञाकारी नहीं है; परन्तु उसे उद्धार मिल गया, इसलिए वह आज्ञापालन के लिए सचेत रहता है। 1 पतरस के अन्तिम अध्याय में, प्रेरितों के लिए सही शब्द आज्ञार्थक थे।

अगुवाई: पवित्रशास्त्र आधारित आदर्श (5:1-3)।

एक धारणा है कि कलीसिया के मार्गदर्शन और संचालन के लिए पतरस के मूल निर्देश सांसारिक दौर के हैं। धारणा यह है : किसी भी संस्था की भलाई के लिए अच्छी अगुआई से बढ़कर और कोई बात महत्वपूर्ण नहीं है। जब लोगों को अपने संसाधनों को साझा करना और मिलकर कार्य करना होता है तो अगुआई जरूरी होती है। यह धारणा है, परन्तु इसके समर्थन के लिए साक्षी के बड़े व्यवहार को लाया जा सकता है।

कम्पनियों के अपने अधिकारियों को भारी वेतन देने पर मीडिया में काफी चर्चा रही है। इनकी संख्या विचित्र है परन्तु हम में से अधिकांश लोग अगुआई की भूमिका के लिए सही व्यक्ति के मूल्य की सराहना कर सकते हैं। कुछ समय पहले की बात है मेरी क्रिश्चियन कॉलेज के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर के एक व्यक्ति के साथ बातचीत हुई। उसने किसी संस्था के अध्यक्ष होने के लिए सही व्यक्ति की महत्वता पर मुझे खुलकर बताया। अच्छे अगुवे बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। यह हर स्थान पर सत्य है, जिसमें खेल का अखाड़ा भी आता है। एक कोच की अधीनता में टीम अच्छा परिणाम लाती है; इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं परन्तु कुड़कुड़ाना और नुकसान ही है। इसका अन्तर अगुआई है।

मसीह की कलीसिया जगत के अन्य किसी संस्थान की तरह बिलकुल नहीं है, परन्तु यह संस्थान की तरह इस बात में है कि इसमें सामान्य हित के लिए कार्य करने वाले लोग शामिल होते हैं। कलीसिया का एक मानवीय पक्ष है। मानवीय स्तर पर, कलीसिया की भलाई के लिए अगुआई का होना आवश्यक है। बाइबल कलीसिया की मानवीय अगुआई को लेकर चुप नहीं है। जब अगुआई की बात आती है तो हमें दो प्रश्नों पर विचार करना चाहिए। पहला, कलीसिया में अगुओं को कार्य कैसे करना है? कलीसिया के अगुओं को मार्गदर्शन में कैसा आदर्श होना चाहिए? क्या उनको एक बोर्ड ऑफ डायरेक्टर की तरह होना चाहिए जो हाथों हाथ निर्णय लेते हैं? क्या वे भलाई करने वाले, सुनने वाले मार्गदर्शक हैं? दूसरा, कलीसिया को किस तरह के लोगों को ढूँढना चाहिए जिनको अगुआ होना

है? दोनों ही प्रश्नों का उत्तर बाइबल में से ही आना है।

इन प्रश्नों की उत्तर की सहायता में हम बाइबल पर विचार करने जा रहे हैं: कलीसिया के अगुओं को कार्य कैसे करना है? उनको कैसे अगुआई करनी है? अगुआई को कलीसिया के साथ कैसे जोड़ना है? पहले पत्र में, पतरस ने कलीसिया को बहुमूल्य निर्देश दिए।

कलीसिया के अगुओं को नियुक्त करने के लिए नए नियम में तीन भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग किया गया है। परमेश्वर के लोग उपाय के विषय एक बड़े व्यवहार की खोज कर सकते हैं वे जो स्वयं को जाँचने के द्वारा अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं। शब्द “प्राचीन,” “पास्टर” और “रखवाला।” 1 पतरस 5:1-3 और प्रेरितों के काम अध्याय 20 में, यह तीनों शब्द उन्हीं लोगों को नियुक्त करने के लिए प्रयोग किए गए हैं। प्राचीन एक पास्टर होता है। पास्टर रखवाला होता है। प्रत्येक शब्द कलीसिया की अगुआई के आदर्श को प्रदान करता है। इन सबको आपस में मिलाने के द्वारा हम एक अच्छे विचार को पा सकते हैं परमेश्वर कैसे चाहता है कि कलीसिया में अगुवे कार्य करें।

1. शब्द “प्राचीन” यूनानी भाषा के शब्द πρεσβύτερος *(प्रैसब्यूटेरोस)* से लिया गया है। नया नियम में इस शब्द का कभी-कभी “बुजुर्ग व्यक्ति” को दर्शाने के लिए भी प्रयोग किया गया है। अगुआई बुजुर्गों के आदर्श के आधार पर यहूदी पृष्ठभूमि से आती है। आराधनालय की आदर्श अगुआई कलीसिया की अगुआई में सहयोग करती है। पौलुस ने निम्न बातें सुसमाचार के प्रचारकों को लिखी जो उसकी अगुआई में कार्य करते थे : “मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे” (तीतुस 1:5)।

नाम का अर्थ यह है कि कलीसिया में अगुवे आयु में परिपक्व, आदरणीय व्यक्ति हों। आयु बुद्धिमानी का आवश्यक संकेत नहीं है; परन्तु अन्य बातों को बराबर होना है, आयु बुद्धिमता के लिए सहायक होती है। हम कलीसिया में सेवक के रूप में कार्य करने के लिए अति बुद्धिमान व्यक्ति चाहते हैं। प्राचीन और आधुनिक समाज में आयु और बुद्धिमता का मेल बड़ी गहराई से साथ- साथ चलता है। अंग्रेजी का शब्द “सीनेटर” मूल भाषा लतीनी से आता है जिसका अर्थ “बूढ़ा व्यक्ति” है। जैसे पुराना नियम की कहानी सामने आती है, लोगों के वृद्ध व्यक्तियों ने इस्राएल देश के शासन और न्यायिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जैसे अमेरिका में किया जाता है। जब मूसा इस्राएल के लोगों की मिस्र देश से बाहर निकालने में अगुआई करने के लिए आया, परमेश्वर ने उसे लोगों के वृद्धों को एकत्र करने के लिए कहा (निर्गमन 3:16)। बाइबल के समय में वृद्ध बार-बार सामने आते हैं। बाद में नगरों पर वृद्धों की समिति के द्वारा शासन किया जाता था (यहोशू 20:4)।

नए नियम में यह बात स्पष्ट है कि यहूदियों के राष्ट्रीय जीवन में वृद्ध लोग महत्वपूर्ण थे। जब कलीसिया को अगुओं की आवश्यकता आन पड़ी, मसीहियों ने (पवित्रात्मा की अगुआई में) बुद्धिमान, भक्त व्यक्तियों को चुना जो आयु में

परिपक्व थे और उनको प्राचीन के रूप में सेवा करने का अवसर देने के द्वारा उनका आदर किया। कलीसिया में प्राचीनों का पहला वर्णन प्रेरितों के काम 11:30 में मिलता है। अपने प्राचीन निरीक्षण के अधीन, अंताकिया की कलीसिया में से यरूशलेम की कलीसिया के लिए अकाल के समय में प्राचीनों को राहत कोष भेजा गया। पहली मिशनरी यात्रा में, पौलुस और बरनबास ने प्रत्येक कलीसिया में प्राचीन को नियुक्त करने के लिए कहा (प्रेरितों के काम 14:23)।

केवल आयु में परिपक्व व्यक्तियों ने ही कलीसिया में प्राचीनों के रूप में कार्य किया। कितनी आयु के? बाइबल ऐसा कुछ नहीं कहती। यह ऐसा है कि प्राचीन के लिए कुछ योग्यताएँ, निर्णय करने के कुछ तत्व शामिल हैं। सामान्य रूप से हम कह सकते हैं कि जब कोई व्यक्ति कई वर्षों से मसीही रहा हो, उसने स्वयं को विश्वासयोग्य और भरोसेमंद दर्शाया हो, जब कलीसिया उसके पास आत्मिक मार्गदर्शन के लिए जाती है, वह विश्वास में परिपक्व व्यक्ति है। बाइबल उस पर आयु की संख्या नहीं लगाती है; हमें भी नहीं लगानी चाहिए।

प्राचीनों के विषय एक सामान्य निष्कर्ष को लेकर यह एक अच्छी बात है। बात की प्रकृति से, प्राचीन कलीसिया में ही उभरकर सामने आते हैं। हम अपने बीच में ही विचार करते और देखते हैं कौन पहले ही से प्राचीन के रूप में सेवा कर रहा है। किस व्यक्ति ने समय आने पर रोगी को सम्भाला है? हम किसके पास सहायता के लिए जाते हैं? हम किसके निर्णय पर भरोसा करते हैं? जब भला काम करने का समय आता है तो कौन लगातार मिलता है? वह व्यक्ति कई भाव में, पहले ही से प्राचीन का कार्य कर रहा है। हम तब उसे नियुक्त करते हैं। उसका धनवान होना उसे इस योग्य नहीं बना देता। न ही उसका सामाजिक स्तर उसके कार्य और उसका हृदय उसे इस सेवा के योग्य ठहराता है।

2. नया नियम में जिन्हें कलीसिया में "प्राचीन" कहा गया उन्हें कलीसिया में "पास्टर" भी कहा गया है। "प्राचीन" शब्द का निरीक्षण करने से कलीसिया में अगुओं के कार्य करने के तरीके से हम बहुत कुछ जान सकते हैं, हम शब्द "पास्टर" पर विचार करते ही एक बड़ी बात को बता सकते हैं। यूनानी भाषा के शब्द से अनुवाद किया गया शब्द "पास्टर" (ποιμήν, *पोयमेन)* का शाब्दिक अर्थ है "चरवाहा।" पास्टर चरवाहा होता है। नया नियम चरवाहे की अगुआई को अपने झुण्ड के ऊपर एक आदर्श के रूप में परमेश्वर के लोगों की अगुआई करने की अगुआई का प्रयोग करता है।

प्रेरितों के काम 20:17 में, पौलुस ने मिलेतुस से इफिसुस की कलीसिया के प्राचीन को बुलाया ताकि वह उनसे मिल सके और उनको सिखा सके। पौलुस ने इन प्राचीनों को बताया कि उन्हें पास्टर होना आवश्यक है। "इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लहू से मोल लिया है" (प्रेरितों के काम 20:28)। 1 पतरस 5:1, 2 में, पतरस ने कलीसिया के प्राचीनों को सम्बोधित किया। उसने उन्हें बताया कि उन्हें "परमेश्वर के झुण्ड के चरवाहे" होना है। यह बाइबल अंश हमें इस बात को समझने के लिए सहायता

करते हैं कि पौलुस का इफिसियों 4:11, 12 में कहने का क्या अर्थ था: "और उस ने कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।" कलीसिया के पास्टर उसके प्राचीन थे।

जब पवित्रात्मा ने कलीसिया में इसके "पास्टरों" को "प्राचीनों" कहकर बुलाया है, तो उसने प्राचीनों की अगुआई के ढंग के विषय एक प्रभावशाली कथन कहा है। चरवाहा अपनी भेड़ों के साथ रहता है। वह उनको नाम से जानता है। भेड़ें उसकी आवाज पहचानती हैं। वह उन्हें हरी-हरी चराइयों की ओर ले चलता है। वह उन्हें जंगली जानवर के आक्रमण से बचाता है। जब वे किसी नाले में गिर जाती हैं तो वह उन्हें बचाता है। वह उनकी देखभाल करता है, जैसे कि वे उसकी अपनी संतान हों।

भेड़ें स्वभाव से असहाय प्राणी होती हैं। नया नियम के काल में यह जानवर सदियों से पालतू पशु थे। वे कुछ भोंदू किस्म की होती हैं। वे परेशानी में पड़ जाती हैं। चरवाहे की अगुआई के बिना वे भूखी रह जाएँगी। इस्राएल के लोगों के लिए चरवाहे बड़े प्रिय लोग थे। दाऊद, उनका पहला महान राजा, इससे पहले कि वह देश का राजा बनता वह भेड़ों का चरवाहा था। महान "चरवाहे का भजन" भजन 23 में, परमेश्वर को अपने लोगों के लिए एक चरवाहे के रूप में चित्रित किया गया है। यीशु ने स्वयं को उसी तरह से प्रस्तुत किया। "चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है" (यूहन्ना 10:10, 11)। पतरस ने टिप्पणी की, "क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास लौट आए हो" (1 पतरस 2:25)।

कलीसिया को अच्छे अगुओं की जरूरत है। पवित्रात्मा कलीसिया के अगुओं को इसके "प्रहरी" या इसके "चर्च के प्रधान" या इसके "शासक" नहीं बुलाता है। वह उन्हें "चरवाहे" कहता है। एक चरवाहा अपनी भेड़ों की अगुआई करता है; वह उन्हें बाध्य नहीं करता है। वह अपनी भेड़ों को भोजन और जल की ओर लेकर जाता है; वह उन्हें उनकी अपनी मर्जी पर जाने के लिए नहीं छोड़ता है। कलीसिया की अगुआई एक उत्तमता की अगुआई है और वह भी शुद्ध भाव से। प्राचीन या पास्टर वह किसी से तनख्वाह नहीं लेता। वह जबरदस्ती नहीं करता। वह किसी को विवश नहीं करता। वह जो है उसी के अनुरूप अगुआई करता है। वह उस आदर के साथ अगुआई जो लोग उसका करते हैं।

3. कलीसिया में अगुआई के लिए नया नियम में तीसरा शब्द जो प्रयोग किया गया NASB और NIV में उसका अनुवाद है "रखवाला।" कलीसिया में अगुवे इसके प्राचीनों या इसके पास्टर या रखवाले हैं। सभी नाम एक ही पद के लिए प्रयोग किए गए हैं। शब्द "रखवाला" यूनानी भाषा के ἐπίσκοπος

(*इपिस्कोपोस*) से अनुवाद किया गया है। अंग्रेजी में शब्द बिशप यूनानी भाषा का विकृत रूप है। "प्राचीन" (ऐल्डर) के लिए अन्य शब्द है "प्रिसबितेर," पास्टर के लिए एक अन्य शब्द है "चरवाहा" और "रखवाला" एक अन्य शब्द है "बिशप।"

प्राचीन लौकिक जगत में,एक व्यक्ति का एक विजेता के संदर्भ में सामान्य रूप से इतिस्कोपोस करार दिया जाता था जिसने नगर को नाश किया हो। विजेता नाश करने और थोड़ी देर तक शासन करने को व्यवस्थित करने के लिए पद पीछे छोड़ दे। व्यवस्थापक इपिस्कोपोस होता था। "प्राचीन" (एल्डर) या "पास्टर" से बढ़कर शब्द "रखवाला" का अर्थ है कि कलीसिया के अगुओं के पास अधिकार है। कलीसिया को अपने अगुवे की सुनना है उस पर ध्यान देना है। प्राचीन, पास्टर, रखवाले विचार में थे जब इब्रानियों के लेखक ने लिखा: "अपने अगुवों की मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उन की नाई तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं" (इब्रानियों 13:17)।

कलीसिया के मामलों पर परमेश्वर ने प्राचीनों को अधिकार दिया है, जैसा कि उसने पति को अपने परिवार पर अधिकार दिया है। हम ऐसा कहेंगे कि यह वह बेचारा पति ही है जिसे लोगों पर अपने अधिकार का स्मरण करवाना पड़ता है और ऐसा ही प्राचीनों के साथ होता है। व्यावहारिक बातों में कलीसिया में अगुओं को कैसे कार्य करना है इसके लिए हम "प्राचीनों" और "पास्टर" और "रखवाले" इन शब्दों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

यह बड़े दुख की बात है कि आज 21वीं शताब्दी में हम जो अमेरिका में सामान्य अगुआई देखते हैं वह एक बोर्ड ऑफ डायरेक्टर है। बोर्ड की मीटिंग होती है, निर्णय लिए जाते हैं और उनको पास कर दिया जाता है। कलीसिया में प्राचीनों का कोई बोर्ड ऑफ डायरेक्टर नहीं है। भले ही वे अधिकार रखते हैं, इसे कलीसिया की आत्मिक आवश्यकताओं की दृष्टि के साथ देखा जाता है। एक अगुआई जो सोचती है उसका मुख्य कार्य बन्द दरवाजों में की सभा में है और सदस्यों पर निर्णय थोप देना यह गलत समझी जाने वाली अगुआई है जैसा बाइबल इसे वर्णन करती है। प्राचीन होने के नाते मोटर गाड़ी खड़ा करने का स्थान और किसे प्रचारक बनाकर भाड़े पर लाया जाए ऐसे निर्णय करने से बढ़कर है।

प्राचीन मसीही विश्वास के लिए आदर्श हैं। वे कोई सिद्ध पुरुष नहीं होते, परन्तु वे परमेश्वर के जन होते हैं। वे अपने उदाहरण के द्वारा अगुआई करते हैं। वे आवश्यकताओं को सुनते हैं। प्राचीन रोगी व्यक्ति के पास होता है, चाहे वह शारीरिक रूप से या आत्मिक रूप से रोगी हो। उनके सुनने वाले कान होते हैं। वे झुण्ड की चरवाही करते हैं। याकूब ने लिखा, "यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें" (याकूब 5:14)।

प्राचीन चरवाहे हैं; परन्तु कभी-कभी, जब आवश्यकता आन पड़ती है तो

प्राचीन अपने अधिकार का भी प्रयोग करते हैं। कलीसिया में कभी-कभी असहमतियाँ उठ खड़ी होती है। परिपक्व, आदरणीय, भक्त अगुवे ही समस्या का समाधान करेंगे। यदि कोई ऐसी शिक्षाएँ आती हैं जिससे सुसमाचार के साथ समझौता करना पड़े तो प्राचीन उसको रोकने का अधिकार रखते हैं।

एक अन्तिम प्रश्न: कोई व्यक्ति कलीसिया में प्राचीन क्यों होना चाहता है? क्या वह अपने लिए बहुत सी परेशानियों को निमन्त्रण नहीं दे रहा है? कोई व्यक्ति प्राचीन के रूप में क्या सेवा करना चाहता है? एक मसीही व्यक्ति के लिए बड़ा सरल सा उत्तर है। प्राचीन होने के नाते वह सेवा के द्वार खोलता है। मसीह अपने लोगों को सेवक होते देखना चाहता है। यदि कलीसिया किसी व्यक्ति को देखती है और कहती है, "हम चाहते हैं कि आप हमारी चरवाही करें," इसके लिए इनकार करना बड़ा कठिन है। यह एक बहुत बड़ा आदर है। प्राचीन के रूप में सेवा क्यों करनी है? उसी कारण से कि किसी भूखे बच्चे को भोजन खिलाना या किसी खोए हुए व्यक्ति को मसीह के विषय बताना। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि जितना वह अच्छा कर सकता है वह मसीह की सेवा करना चाहता है। यह कोई प्राचीन का अधिकार नहीं है जिस पर नया नियम बल देता हो। इसके बजाए यह उनकी सेवा है, उनका कार्य है। परमेश्वर का दास स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा है (मत्ती 20:26)।

विश्व भर में भाईचारा (5:9)

एक मसीही होने के लिए विश्वास के समाज में रहना है। स्थानीय कलीसिया संगति का मुख्य केन्द्र बिन्दु है, परन्तु इसके लिए इससे भी बढ़कर है। संगति विश्वासियों के एक बड़े समूह में है जो एक देश से दूसरे और सारे जगत में फैलती है। प्रभु भोज लेना भाईचारे के भाग को प्रत्यक्ष स्मरण करवाता है जो सारे जगत में फैलता है और यह पिछली सदियों से है।

मध्य प्रशान्त महासागर में कहीं अंतर्राष्ट्रीय दिनांक रेखा है। प्रत्येक सात दिनों में सप्ताह का पहला दिन आरम्भ होता है, ऐसे विश्वासी हैं जो तैयारी करते हैं। कुछ पैदल चलते हैं, कुछ गदहों पर सवार होकर आते हैं या मोटर गाड़ी में आते हैं या नाव में बैठकर या रेलगाड़ी में आते हैं। वे मिलकर सभा स्थल के लिए यात्रा करते हैं। छोटे समूहों में और बड़े समूहों में, वह प्रभु के दिन एकत्र होते हैं। वे रोटी तोड़ते हैं, और वे प्याले में से पीते हैं, यह स्मरण करते हैं कि यीशु उनके पापों के लिए मरा। वे एक दूसरे से बातचीत करते हैं, और वे यीशु की वापसी की आशा करते हैं। जब ग्रह पर सवेरा होता है, चौबीस घण्टों के समय से एक नया दृश्य सामने आता है। हम जब आराधना करते हैं, हम लाखों लोगों के साथ जुड़ते हैं। यह भाईचारा जो सारी धरती पर फैलता है हमारा भाईचारा है, हमारे लोग हैं।

आओ हम सब मिलकर अपनी योग्यताओं के अनुसार स्थानीय कलीसिया को पूर्ण सहयोग दें। अपने हाथों को पकड़ें, हंसें, आराधना करें या जैसा हो उनके साथ रोएँ। फिर भी हम याद रखे कि हमारी स्थानीय कलीसिया से बढ़कर

परमेश्वर के लोगों की एक विशाल संगति है। विश्व भर में हमारी संगति प्रभु के दिन होती है। हम उन्हें हमारी प्रार्थनाएँ और हमारी शुभकामनाएँ देते हैं। वे हमारे लोग हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]प्राचीनों के सही प्रकार से नियुक्त किए जाने और कार्य के लिए, देखें सवेरे फर्ग्यूसन, *द चर्च ऑफ क्राईस्ट: ए बिबलिकल एक्कलिसियोलोजी फॉर टुडे* (ग्रैंड फ़्रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1996), 295-98, 310-27. [2]जे. एन. डी. केली, *ए कॉमेन्ट्री औन द एपेसिल्स ऑफ पीटर एण्ड जूड,* ब्लैक्स न्यूटेस्टमेन्ट कॉमेन्ट्रीस (लंडन: एडम & चार्ल्स ब्लैक, 1969), 198-99. [3]अंग्रेज़ी शब्द “बिशप” यूनानी शब्द *episkopos* का बिगड़ा हुआ रूप है। KJV अनुवादकर्ताओं का मार्गदर्शन करने को दिए गए निर्देशों में से एक था कि वे कलीसियाओं में प्रयुक्त होने वाले सामान्य शब्दों का प्रयोग करें। क्योंकि कलीसियाओं के अध्यक्षों या निरीक्षकों को चर्च ऑफ इंगलैंड में “बिशप्स” कहा जाता था, इसलिए यही शब्द यूनानी शब्द के अनुवाद के लिए भी प्रयुक्त किया गया। [4](κληρονομία, *केलेरोनोमिया)* शब्द के यौगिक रूप का अनुवाद 1 पतरस 1:4 में “मीरास” किया गया है। [5]जे. रमससे मिकाएल, *1 पीटर,* वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वॉल्यूम 49 (वाको, टेक्स: वर्ड बुक्स, 1988), 286. [6]सी. एस. लेविस, *मेयर क्रिश्चियनिटी* (न्यू यार्क: मैकमिलन कम्प.: 1961), 94. [7]यूनानी भाषा में दो समानांतर विशेषण है “युवा” और वृद्ध। विशेषण पुलिंग बहुवचन हैं, इसलिए अनुवादकों ने अर्थ बनाने के लिए बाद में जो दिया “पुरुष,” परन्तु “प्राचीनों” के विषय में यह अनावश्यक शब्द है। [8]एलन एम. स्टीब्बस और एण्ड्रयू एफ. वाल्स, *दि फर्स्ट इपिस्टल जनलर ऑफ पीटर,* टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रेंड रेपिडस, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959), 170. [9]जे. गोएटज़मन, “केयर, एंक्सायटी,” इन *दि न्यू इंटरनेशनल डिकशनरी आफ दि न्यू टैस्टामेंट थियोलॉजी,* इडी. कोनिल ब्राऊन (ग्रैंड रेपिडस, मीका जांडरवैन, 1976), 1:277. [10]आर. इ. एनलो, “एंक्सायटी,” इन *इवेंजीलिकल डिकशनरी आफ बिबलिकल थियोलॉजी,* इडी. वाल्टर ए. एलवेल (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1996), 28.

[11]विज़डम ऑफ सोलोमन 12:13 (NRSV)। [12]जॉन स्टॉट, *दि कॉन्टेम्पोरेरी क्रिश्चियन* (लीसेस्टर, यू के.: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1992), 335.